

कतूतम (कतु + उत्तम) m. das vornehmste Opfer, das Rāgasūja-Opfer TAII. 2, 7, 6.

कतूय (denom. von कतु), कतूयति die geistige Kraft anstrengen: कतूयति नितयो योगे RV. 4, 24, 4.

क्रवामघ (क्रवा, instr. von कतु, + मघ) adj. viell. willig spendend; dann müsste aber im Texte क्रवामघस्य als ursprüngliche Lesart angenommen werden. उत त्ये मा मारुताश्चस्य शोणा क्रवामघासो विदधस्य रतिः RV. 5, 33, 9.

क्रथ्, क्रथति verletzen, tödten Dhātup. 19, 39. — क्रथयति 1) dass. 34, 19. mit dem gen. P. 2, 3, 56. Vgl. क्रथन. — 2) erfreuen, erheitern Dhātup. 32, 13. — Vgl. क्रथ्, क्रथ.

क्रथ und क्रथ (v. l. कुथ) Siddh. K. 230, a, 4. m. N. pr. eines zu den Jādava gehörenden Volksstammes, welcher auf Kratha, einen Sohn Vidarbha's und Bruder Kaiçika's, zurückgeführt wird, LIA. I, 611. Anh. xxviii. Ind. St. 1, 209. सपाण्ड्यक्रथकैशिकान् MBh. 2, 585. इधरेण क्रथकैशिकानाम् Ragh. 5, 39, 61. 7, 29. MĀLAY. 77. sg. als Personennamen MBh. 1, 2697. 2, 1081. HARIV. 1988. 5980. 6390. 6665. VP. 422. Bhāg. P. 9, 24, 1, 3. — N. pr. eines Asura: क्रथस्तु राजवाजर्षिः तितौ जज्ञे महा-सुरः ॥ पार्वत्ये इति व्यातः काञ्चनाचलसेनिमः । MBh. 1, 2665. fg. HARIV. 2284. 12940. 14287. — Vgl. क्रथन, क्रथ.

क्रथन 1) m. N. pr. eines Asura MBh. 1, 1488. 2693. HARIV. 12696. eines Nāga, eines Sohnes von Dhrtarāshtra MBh. 1, 4550. eines Affen R. 4, 63, 4. 5, 1, 39. 6, 2, 47. 3, 28. Vgl. क्रथ. — 2) n. Blutbad AK. 2, 8, 83. राजन्योच्चोक्तक्रथनपट्टद्वारधारः कुठारः PRAB. 3, 10. Sch. 1: क्रथन = विनाश, Sch. 2: = क्रदन. Blutsturz (?): तमतिस्थूलं नुदश्चास-पिपासानुत्सवप्रस्वेदगात्रैर्दार्ढ्यक्रथनगात्रसादगदहानि निप्रमेवाविशति Suçr. 1, 52, 15. Vgl. क्रथ्. Nach WILSON auch das Schnarchen.

क्रथनक 1) m. N. pr. eines Kameels PĀNĀT. 68, 12. — 2) n. schwarzes Aloeholz ÇANDAK. im ÇKDr.

क्रद् s. क्रन्द.

क्रधिष्ठ s. u. कृधु.

क्रन्द, क्रन्दति und क्रन्दते (auch क्रन्दते nach einer v. l.) Dhātup. 3, 34. 19, 11; चक्रन्द und चक्रदे (ved. s. u. अनु); ved. aor. 2. und 3. अक्रन्, अक्रान्, क्रन्; क्रदस्; अक्रन्दीत् (P. 7, 4, 65, Sch.). 1) wiehern, brüllen, bildlich vom Donner und Wasser (rauschen): क्रन्दद्द्यो ह्रुवद्वाः RV. 1, 173, 3. अत्यो न क्रदः 9, 97, 18. 28. यदक्रन्दः प्रथमं जार्यमानः 1, 163, 1. अक्रन्दद्यि स्तनयन्त्रवि द्यौः 10, 43, 4. 44, 8. क्रन्दतीव हि पश्य स्तनयन् Çat. Br. 6, 7, 2. VS. 22, 7. तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत्स्वर्षाः RV. 1, 100, 13. पञ्चमान विधर्मणि । अक्रन्द्वो न सूर्यः (SV.: क्रन्दन्) 9, 64, 9. हरिरक्रान्यजतः संयतो मदः 69, 3. अक्रान्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् 97, 40. — 2) knarren, vom Rade: यथा रथचक्रं वा कैलालचक्रं वाप्रतिष्ठितं क्रन्देत् Çat. Br. 11, 8, 4, 1. — 3) kläglich schreien, jammern Dhātup. चक्रन् (hier wie im vorherg. Verse partic. praes. von 2. कर् und dort nachzutragen) क्रन्ददार्थ्यं शिवार्यै RV. 10, 93, 13. मा पितः क्रन्द MBh. 1, 6201. निशम्य करुणं क्रौञ्चीं क्रन्दतीम् R. 1, 2, 17. 3, 51, 3. Vid. 26. 102. Bhāg. P. 5, 14, 38. किं क्रन्दसि PĀNĀT. IV, 31. क्रन्दति करुणम् Vikr. 3. सा मुक्तकाण्ठम् — चक्रन्द विद्या कुररीव Ragh. 14, 68. 15, 42. BHATT. 3, 28. 5, 5. 14, 48. अक्रन्दीत् 13, 95. क्रन्दितुम् ÇAK. 126. med.: तां क्रन्दमानामत्यर्थं कुररीमिव वाशतीम् MBh. 3, 2381. R.

4, 24, 41. क्रन्दित n. ein klägliches Schreien, Jammern AK. 1, 1, 3, 25. H. 1402. an. 3, 257. MED. I. 103. — 4) Jmd kläglich anrufen, mit dem acc.: क्रन्दत्वविरते सो ऽथ भ्रातृमातृसुतानथ MĀRK. P. 10, 60. त्राहीति चार्ताः क्रन्दति माम् 15, 68. = आह्वान anrufen Dhātup. क्रन्दित n. das Herberufen H. an. 3, 257. MED. I. 103. — caus. angeblich nicht mit dem acc. P. 1, 4, 52, VĀRT. 1, Sch. 1) brüllen —, rauschen —, dröhnen machen: अक्रन्द्यो नद्यः RV. 1, 54, 1. यो अक्रन्दयत्सलिलम् AV. 8, 9, 2. शतमुष्ट्रं अचिक्रदत् RV. 8, 46, 31. स विष्मा विश्वा भुवनानि चिक्रदत् VĀLAKH. 3, 4. ततं तन्तुमचिक्रदः RV. 9, 22, 7. SV. I. 6, 2, 2, 6. — 2) zum Jammern bringen: क्रन्दितान् (कुमारान्) Suçr. 2, 382, 13. — 3) brüllen, rauschen u. s. w., aor.: दिवो न सानु स्तनयन्त्रचिक्रदत् RV. 1, 58, 2. अचिक्रदद्दृषणं पत्न्यक्षा 4, 24, 8. 7, 20, 9. 36, 3. VS. 38, 22. AV. 3, 3, 1. 18, 4, 58. द्यौर्न चक्रदद्द्विषा 8, 7, 26. अथो न चक्रदो वृषा 9, 64, 3. vom Soma: स शुष्मी कलशेषा पुनानो अचिक्रदत् RV. 9, 18, 7. 75, 3. 96, 24. — intens. ved. कर्निक्र-ति; partic. कर्निक्रत् (RV. 9, 63, 20), gew. कर्निक्रदत् (P. 7, 4, 65; nach dem Schol. aor. vom simpl., = अक्रन्दीत्); कनिक्रद्यमान Çat. Br. 6, 4, 4, 7. wiehern, brüllen, schreien, rauschen, dröhnen: इन्द्रतयो न वाङ्म-त्कर्निक्रति पवित्रं आ RV. 9, 43, 5. 95, 1. (वृषभः) दधदतः कर्निक्रदत् 1, 128, 3. 132, 5. 4, 50, 5. 5, 83, 1. यत्पश्यन् कर्निक्रदत्स्तनयं हंसि दुष्कृतः 9, 97, 32. AV. 2, 30, 5. kreischend, von einem Vogel RV. 2, 42, 1, 2. knatternd, vom Feuer: प्र मातृभ्यो अघि कर्निक्रदद्वाः 10, 1, 2. med.: अक्र-तानि मर्माणि कनिक्रते (Sch.: तानि दण्डादिभिरताडितानि वर्माणि चर्म-पुक्तानि भेदीनि कनिक्रन्दते शब्दं कुर्वति) ADBh. Br. in Ind. St. 1, 41. Vgl. कनिक्रद.

— अनु med. zurufen: सद्यः सो अंस्य मर्हिमा न संशो यं तोषीरनुचक्रदे RV. 8, 3, 10.

— अभि anwiehern, anbrüllen, anschreien: अभिक्रन्दन्कलशं वावर्षति RV. 9, 86, 11. 38, 6. 10, 21, 8. अभि क्रन्दति हरिर्तेभिरासभिः 10, 94, 2. अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धाः 5, 83, 7. त्वं भुवनं जनयन्त्रभि क्रन् 7, 5, 7. AV. 8, 7, 21. यत्प्राण स्तनयितुनाभिक्रन्दत्योर्षधीः 11, 4, 3, 4. 3, 12. 5, 20, 2, 7. LĀTJ. 9, 9, 22. — caus. aor.: अभि गा अचिक्रदत् RV. 9, 82, 1. — intens. partic.: (वृषा) अभिकर्निक्रदद्वाः RV. 9, 97, 13. 67, 14. 10, 67, 3.

— अब्रüllen: अब्र क्रन्द दक्षिणतो मूकाणाम् RV. 2, 42, 3. अब्रान्नियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः 5, 38, 6. — caus. dass. (nur in Verbind. mit वने oder वनेषु) वृषाव चक्रदद्ने RV. 9, 7, 3. शिप्रन् ज्ञातो ऽव चक्रदद्ने 74, 1. 86. 31. 107, 22. — Vgl. अब्रक्रन्द.

— आ 1) anschreien, anrufen: आ ता शिपुराक्रन्दतु PĀR. GRHJ. 3, 4. आक्रन्दद्भीमेन वै येन यातो महाबलः MBh. 3, 11461. एक्षोहीति शिख-णिङनां पुरतरं केकाभिराक्रन्दितः (मेघः) MĀRK. 84, 21. — 2) kläglich schreien, jammern, weinen: आक्रन्दत्यत्तरितस्या आगच्छेत् नराधिप MĀRK. P. 8, 156. तृणाग्रलघ्नेस्तुहिनैः पतद्भिराक्रन्दतीवोषसि शीतकालः R. 4, 7. आक्रन्दिषुः BHATT. 15, 50. med.: आक्रन्दमानो संश्रुत्य MBh. 3, 2388. यदा प्रकृयस्त इव क्वचिदसत्याक्रन्दते Bhāg. P. 7, 7, 35. आक्रन्दित n. Gebrüll, klägliches Geschrei: धेनोः Ragh. 2, 28. अलमाक्रन्दितेन Vikr. 5, 5. पुत्रयोः Bhāg. P. 9, 14, 28. — caus. 1) herdröhnen u. s. w.: आ क्रन्दय बलमोत्रो न आ धाः dröhne uns Kraft her, flüsse uns Muth ein (o Trommel) RV. 6, 47, 30. — 2) laut zurufen, anschreien: आ क्रन्दय धनपते AV. 2. 36, 6. पुरुषानाक्रन्दयतः Çat. Br. 11, 6, 4, 6. VS. 16, 19. Nach einer Interpr.